ISSN No. 2394-9996

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में नारी विमर्श : `मित्रों मरजानी` उपन्यास के संदर्भ में

शोध छात्र
अंधारे सचिन बेबी
गुरूकुल अध्यापक विद्यालय, बीड.

नारी अस्मिता या नारी विमर्श की अवधारणा आधुनिक युग की देन है, स्त्री की स्व की पहचान लिंग, जाति, रिश्ते-नाते, समाज, धर्म, देश, राष्ट्र बोली तथा व्यवसाय के आधार पर करती है, नारी के स्वयं की पहचान करना ही नारी विमर्श है। नारी विमर्श अंग्रेजी शब्द Feminism का हिंदी रूपांतरण है, जिसका अर्थ है स्त्री के अधिकारों सत्ता शक्ति की वकालत करना। विमर्श का व्युत्पत्तिपुरक अर्थ विचार - विमर्श, सोचना समझना और आलोचना करना है।`

नारी मुक्ति आंदोलन से पहले दिन लेखिकाओं ने हिंदी साहित्य में नारी-विमर्श की महत्वपुर्ण भूमिका बनायी उनमें कृष्णा सोबती का विशेष योगदान रहा है। उन्होंने अपने लेखन द्वारा स्त्री की प्रचलित छवि को तोड़कर एक नई दृष्टी से स्त्री को पुर्नस्थापित करने का प्रयास किया है। कृष्णा सोबती का नाम महिला कथाकारों मे सर्वथा विशिष्ट और महत्वपूर्ण है, उन्होंने साहित्य में नयी दिशाओं की खोज की है।

उन्होंने नारी को गुडिया या कठपुतली में प्रस्तुत न कर उसे यथार्थ के धरातलपर प्रस्तुत किया है। वह नैतिकता के अंदर अपने विचारों को कैद करना नही चाहती है इसीकारण उनकी रचनाओं में उनका दबंग व्यक्तिमत्व उभारता है, जो परंपरागत रूढियों को तोड़ने की क्षमता के साथ - साथ वक्त से जोड़ने का सामर्थ्य भी रखता है।

राजेंद्र यादव के अनुसार - ``उनकी रचनाओं धड मास की आत्म-प्रबुद्ध कद्दावर गर्वोन्नत औरत बनकर खड़ी होने लगती है। जरूरी है कभी-कभी रचना खुद रचनाकार को अनावश्यक और अप्रासंगिक बना जाती है।``[2]

`मित्रो मरजानी` कृष्णा सोबती का वह उपन्यास है जिसके कथ्य और चरित्र ने एक लंबे अरसे तक हिंदी साहित्य में हलचल मचा दी थी। मित्रो जैसा

नारीचरित्र समूचे हिंदी कथा साहित्य में दुर्लभ है, मित्रों साहित्य की पहली ऐसी नारी है, जो सदियों से चले आ रहे नैतिक मूल्यों को तार - तार कर अपनी जिंदगी जीती है, उसमें योवन की अमिट प्यास है। डॉ. सरिता कुमार के अनुसार ``मित्रो`` मरजानी मे शारीरिक संबंध पर अधिक बल दिया गया है, उसकी दैहिक प्यास का इतना खुला चित्रण सोबती के साहस का परिणाम है कहा जा सकता है।``[3]

मित्रो मरजानी एक दबंग नारी होने के साथ तेजोभरी चेतना संपन्न ऐसी स्त्री है जो रमणी की पुत्री होने की वास्तविकता और स्वरूप से अनजान है। परिवार और पति का बंधन उसकी ताजी युवा काया को यौन संतुष्टि देने में असमर्थ है। `मित्रो मरजानी` उपन्यास की कहानी मित्रों के चारों तरफ घुमती है, मित्रो स्वच्छंद वातावरण में पली बड़ी हुई है। मित्रों कहती है, ``देवर तुम्हारा मेरा रोग नही पहचानता। बहुत हुआ घटते परिवार और मेरी देह में इतनी प्यास है, इतनी प्यास कि मच्छली सी तड़पती हुँ।``[4]

मित्रो ऐसी स्त्री है जो धर्म और संस्कृति के नामपर दबने या कुंठाओं का शिकार होने वाली नहीं बल्कि खुलकर अपनी आवश्यकताओं विशेषकर शारीरिक आवश्यकताओं को स्वीकारती है। मित्रों का पति सरदारी उस पर नियंत्रण करने का भरसक प्रयत्न करता है, परंतु असफल रहता है। वह पति सरदारी द्वारा दी गई शारीरिक प्रताड़ना ओर जेठ बनवारी की जवाबदेही से तनिक भी घबराती नही है भले ही ससुराल पक्ष के लोग उसे ढीठ निर्लज्ज मानो, वह बिलकुल खुले हुये ढ़ंग से अपनी यौन अतृप्ति की बात कहती है।

मित्रों का अपनी सास जेठानी आदि ससुरालपक्ष के व्यक्तियों से प्रेम बहुत है पर वह ससुराल के किसी भी प्रकारके बंधन को स्वीकारने को तैयार नही है। इसी कारण वह अपने सभी ससुराल पक्षवालों को ठेंगे पर रखती है। सास व जेठ के प्रति अपने बेबाक व्यवहार और पुरूषों को रिझाने के डर से मित्रों को कुछ समय के लिए मायके भेज देते है। इधर मायके में उसकी माँ बालों ने स्वयं भी एक अप्रतिबंधित जीवन व्यतित किया था। उसकी माँ बालों जो एक गणिका के रूप में रही है। वह उसके यौन तृप्ति का प्रबंध भी करा देती है लेकिन वहाँ पर एक ऐसी घटना घटित होती है, कि मित्रों का मन परिवर्तित हो जाता है, अनेक पुरूषों के पास भटकनेवाली मित्रों अंततः सरदारी के प्रति समर्पित हो जाती है। क्योंकि वह अपनी माँ बालों का अकेलापन तथा अपेक्षित अवस्था को अपने भविष्य का हिस्सा बनाने को तत्पर नही होती।

अपनी माँ बालों का कल्पता बुढापा देख उसकी चैतन्यता वापिस उसे पति और परिवार की चौखट की ओर मोड़ती है। शरीर की उपयोगिता और सार्थकता उसे समझ में आ जाती है। पति - बच्चे-घर संसार में जबरन दबाई गई स्त्री का निर्णय नही है बल्कि मित्रों की बौद्धिकता और चेतन्यता का परिणाम है।

मित्रों मरजानी उपन्यास में कृष्णा सोबती ने बालों जैसे व्यक्ति न केवल समाज के द्वारा स्वीकारा है बल्कि एक माँ के रूप में भी उसकी बेटी मित्रों को उससे शिकायत नही है और नही बालों की बेटी होने से वह अपने को अपेक्षित समझती है और अपनी माँ के चरित्र की विशेषता का वह खुला प्रदर्शन करती है। स्त्री के सौंदर्य की प्रशंसा जग जाहिर है साहित्य में भी इसी की चर्चा है, स्त्री ने सौंदर्य को हथियार की तरह प्रयोग किया है वह अपने मालिक को वश में करने के सुंदरता को अस्त्र बनाए रहती है। राजकिशोर के अनुसार ``सुंदरता ही उसका सामाजिक पासपोर्ट है। अगर वह खुबसूरत है तो उसे चिंता करने की जरूरत नहीं। वह अपनी सुंदरता बनाए रखे तो दुनिया की सारी नियामतें उसका चरण चुंबन करने के लिए प्रतिद्वंदित करती नजर आएगी।``[5] लेकिन साथ में यह भी सत्य है कि पुरूषों को रिझाने के लिये अपने सौंदर्य का प्रयोग करना हमारे समाज में वर्जित है पर सोबती के मित्रों अपनी सुंदरता पर केवल गर्व ही नही करती बल्कि सज सवार कर पुरूषों को लुभती है वह तो अपने यौवन और सौंदर्य से भगवान को भी लुभाने का दम रखती है। तभी तो जब जेठानी सुहागवन्ती उसे ईश्वर का वास्ता देकर सही राहपर चलने की सलाह देती है तब मित्रो कहती है. ``मित्रो से सदा की तरह आँखे नचाई-काहे का डर जिस बड़े दरबारवाले का दरबार लगा होगा। वह इन्साफ ही क्या मर्द जना होगा? तुम्हारी देवररानी भी हॉक पड गई तो अग जहान का अलबेला गुमानी एक नजर मित्रों पर भी डाला लेगा।``

साथ ही मित्रो को यह भी अहसास हो जाता है कि सुंदरता पेडोंपर आयी बहार के समान होती है जो सदा ही नही रह पायेगी।यह अहसास उसको अपनी माँ की सुंदरता और यौवन के उतार के बाद माँ के जीवन में आये अकेलेपन को देखकर होता है, और वह अपने सौंदर्य तथा यौवन को पति पर न्योछावर करने का निर्णय लेती है।

अनेक पुरूषों के पास भटकनेवाली मित्रों अंतत: पति सरदारी के प्रति समर्पित हो जाती है क्योंकि `मित्रो` जान जाती है कि अंकुशों से अलग या हटकर जीने और सोच सकनेवाली औरत की विद्रोह अवधि बहुत छोटी होती है, प्राय: तभी तक जब तक शरीर यानी यौवन उसके साथ है।

वह अपनी नारी व्यक्तित्व को कायम रखते हुए इस व्यवस्था को टुटने नही देती जो समाज ने मानवीय संबंध को बनाये रखने के लिए बनाई है वह अपनी सारी कामनाओं की बेबाक अभिव्यक्ति करते हुए भी उस परंपरा के अनुशासन संबंधी रहने को तत्पर रहती है जो व्यक्ति को सुरक्षा और आत्मविश्वास से भर देती है। उसकी माँग उसी परंपरा से है उसके बीच रहकर उसे परिवर्तित करने से है - मित्रों के बारे में कृष्णा सोबती कहती है- ``मित्रों अपने बुतेपर घुरती है लडती है, मसखरी करती है, टक्कर लेती है सीनाजोरी भी करती है।

मित्रो को या मित्रों जैसी स्त्रियों को समाज भले ही हेय दृष्टि से देखे लेकिन इस सच्चाई से इनकार नही किया जा सकता है कि विवाह के पश्चात भी एक स्त्री अतृप्त रह सकती है, लेकिन `मित्रो` की बातों में अश्लीलता ही नहीं जीवन का सत्य भी है। मित्रों मरजानी में मित्रों के लिये स्त्री के संबंध में प्रचलित सारी किवदंतिया अर्थहीन हो जाती है।

मित्रों के चरित्र की विशेषता का एक नया रूप उपन्यास के अंत में व्यक्त होता है। मित्रों की परिणति सारे खुलेपन के बावजूद परंपरा के सामने न्यौछावर होने की दिखाई पडती है, इस उपन्यास मित्रों मरजानी में सोबती ने नारी के सहज रूप को प्रस्तुत किया है लेकिन उनमें नारी का अनुठा व्यक्तित्व दिखाता है क्योंकि हम नारी के उस रूप से परिचित है जो मर्यादा और अनुशासन में ढलकर एक कठपुली बनकर रहती है यहाँ सोबती ने स्त्री के अंतर्मन से हमे परिचित कराया है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि कृष्णा जी से एक ऐसी लेखिका है जिन्होंने साहित्य में व्यक्ति के स्तर पर स्त्री की प्रतिष्ठा और उसकी अस्मिता संबंधी प्रश्नों को मुखरतासे उठाया है।

संदर्भ सूची :-

1) समकालीन महिला उपन्यासकारों में नारी विमर्श - मुक्ता त्यागी, पृ.क्र. 14

2) आदमी की निगाह में औरत - राजेंन्द्र यादव, पृ.क्र. 153

3) महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप - राजेंन्द्र यादव, पृ.क्र.

4) मित्रो मरजानी - कृष्णा सोबती - 411, 82-83.

5) स्त्री - पुरूष : कुछ पुर्नविचार - राजेंन्द्र यादव - 84.

6) कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी विमर्श - कृष्णा सोबती, पृ.क्र. 53.

☆ ☆ ☆